ओम् शांति। मीठे–2 बच्चों ने गीत सुना, जब धर्म की ग्लानि होती है और फिर माया का परछाया होता है। इस समय भारत में माया का परछाया है तो कहते हैं तब–2 रूप बदलता हूँ। रूप तो सब बदलते हैं। जो भी आत्माएँ आती हैं उनको यहाँ रूप बदलना ही है, निराकार से साकार बनना ही है। कहते हैं, अब रूप बदल आ जाओ। बाप कहते हैं, भारत पवित्र गृहस्थ आश्रम था, अब अपवित्र हो गया है। अपवित्र को अब पवित्र गृहस्थ धर्म बनाना है। सन्यासियों का तो है ही निवृत्तिमार्ग। वे गृहस्थ धर्म, घर–बार छोड़ हद का सन्यास करते हैं। वह भी ड्रामा में पार्ट है। जैसे सृष्टि में सबका पार्ट है देवता, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र और सब धर्मों का भी पार्ट है। क्राइस्ट की आत्मा ने आकर धर्म स्थापन किया। यह भी आदि सनातन देवी–देवता धर्म फिर से लोप हो गया है तो फिर से स्थापन करना पड़े। बाप कहते हैं मैं आता हूँ भारत में। भारत में ही धर्म प्रायःलोप हो जाता है। हिन्दू धर्म में फिर और–2 धर्मों में कनवर्ट हो जाते हैं। इसको कहा जाता धर्म ग्लानि। अभी तुम जानते हो, बाप आया है, फिर से राजयोग सिखलाए रहे हैं। चित्रों में दिखलाते हैं विष्णु की नाभि से ब्रह्मा निकला, फिर ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं। बाप आकर सभी वेदों–शास्त्रों का सार समझाते हैं, ऐसे नहीं, शास्त्र पढ़ते हैं। और सन्यासी आदि सभी पढ़ते हैं, यह तो पहले से ही नॉलेजफुल है, सृष्टि के आदि–मध्य–अंत के चक्कर का नॉलेज है। आत्मा कहती है मैं आती हूँ शांत, निराकारी देश से। वह है साइलेंस, फिर मूवी, यह टॉकी। टॉकी बनने लिए ऑरगन्स चाहिए। गर्भ से बच्चा बन बाहर निकलते ही फिर पालना होती है। सभी बाप (प०पि०) को याद करते हैं कि भक्तों का(को) भक्ति का फल देने आओ। अभी भक्तिमार्ग पूरा हो फिर ज्ञानमार्ग की प्रालब्ध शुरू होनी है, तो ज़रूर बाप भक्ति की अंत में आवेगा। भक्ति का अंत सो कलियुग का अंत, कलियुग का अंत सो दुनिया का अंत, फिर कलियुग के बाद सतयुग को आना ही है। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाए मनुष्य से देवता बना रहा हूँ। पतित दुनिया में देवताएँ रह न सके, तो ज़रूर पतित दुनिया का विनाश, पावन दुनिया की स्थापना चाहिए। पतित दुनिया में अनेक धर्म, अनेक मनुष्य हैं, सतयुग में ज़रूर थोड़े होने चाहिए। एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म रहता है। भारत का कब विनाश नहीं होता। देवी–देवताओं का राज्य है तो और खण्ड रहते नहीं। तो एक धर्म की स्थापना होती है तो अनेक धर्मों का विनाश भी चाहिए। बाप कहते हैं मैं करन–करावनहार हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्राह्मण सो फिर देवता बन रहे हैं शिक्षा से। देवी–देवता रहते ही हैं स्वर्ग में। ब्र०वि०शं० हैं सूक्ष्मवतन में। स्वर्ग में फिर कहेंगे, देवी–देवताएँ दैवी गुणों वाले मनुष्य। इन्हों को भगवती–भगवान भी नहीं कहना चाहिए। ब्र०वि०शं० भी सूक्ष्मवतनवासी हैं। देव–2 महादेव कहते हैं। इनको भी भगवती–भगवान नहीं कह सकते, न देवी–देवता कह सकते। वास्तव में उन्हों का कोई धर्म ही नहीं है। धर्म की स्थापना हो रही है, बाप आकर देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। ब्र०वि०शं० कोई देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र धर्म में नहीं आते हैं। डीटी धर्म वालों को नीचे उतरना है। ये भारत के वर्ण हैं। विराट रूप में भी दिखाते हैं– देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। ब्राह्मणों की चोटी भूल जाते हैं। शिवबाबा को भी भूल जाते हैं। वास्तव में ऊँच ते ऊँच हैं ब्राह्मण। बाप ब्राह्मण धर्म स्थापन कर रहे हैं। ब्रह्मा मुखवंशावली हुआ ब्राह्मण धर्म। तुम बच्चे प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हो, एडॉप्ट हुए हो। एडॉप्ट कौन करते हैं? शिवबाबा ब्रह्मा मुख से कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की तो ज़रूर मुखवंशावली होगी ना! कुखवंशावली हो न सके। मुख से ब्राह्मण धर्म स्थापन किया जाता है।

बाप कहते हैं, मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, तुम्हारे में प्रवेश नहीं करता। विष्णु व शंकर में तो नहीं आवेगा, प्रजापिता ब्रह्मा में यहाँ आना है। तो बाप समझाते हैं ब्रह्मा मुख द्वारा ब्राह्मण धर्म की स्थापना कर रहा हूँ। ब्राह्मण ही त्रिकालदर्शी बनते हैं। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है, जिससे सृष्टि के आदि–मध्य–अंत को जानते हो। देवताओं में यह नॉलेज नहीं रहती, वहाँ तो है प्रालब्ध। पहले तुम 16 कला हो फिर नीचे उतरते हो। संगमयुग, महाकल्याणकारी युग यह है, और युग अकल्याणकारी ही होते हैं। सतयुग से त्रेता हुआ तो दो कला कम हो जाते, अकल्याण हुआ न! फिर त्रेता से द्वापर और द्वापर से कलियुग में आते हैं, फिर अंत में बाप आकर सबको ऊपर चढ़ाते हैं। बच्चे कहते हैं, हम आत्माओं ने 84 जन्म पूरे किए हैं। सब तो 84 जन्म नहीं लेते, कोई 80, कोई 70 भी लेते हैं। कम से कम कोई एक जन्म भी लेते हैं, रही–कुही आत्माएँ आ जाती हैं। जब ऊपर खाली (हो) जाती है तो फिर बाबा आए सबको ले जाते हैं, निराकारी दुनिया फिर भर जाती है। बाप को आना तो ज़रूर है। हर एक का अविनाशी पार्ट है। यह अविनाशी ड्रामा है तो पार्ट भी अविनाशी होता है। यह ड्रामा जूँ मुआफिक टिक–2 करता रहता है– सेकेण्ड पास हुआ ड्रामा नया शुरू हो जाता और प(ह)ला लपेट जाता। फिर तुम जाकर प्रालब्ध पाते हो ... नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप समझाते हैं मुझे भारत खण्ड में आना पड़ता है, इसमें अदल–बदल कुछ नहीं हो सकती। गाया जाता है बनी–बनाई बन रही...। कोई भी अनहोनी चीज़ न है, होनी ही है। कोई मर गया, हम साक्षी हो देखते हैं। इस समय के लिए ही गाया जाता है– अम्मा मरे तो हलवा खाऊँ। बेफिकर फखुर में रहते हैं– हम बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हैं। वह है ज्ञान ज्ञानेश्वर, हम मास्टर हो गए। हम ब्राह्मणों में ही यह सारा नॉलेज है। स्वदर्शनचक्रधारी हम हैं। शंखध्वन गान हम ब्राह्मण बच्चे ही कर सकते हैं। ज्ञान से सद्गति होती है, अज्ञान से दुर्गति होती आई। सद्गति करने लिए मुझे आना पड़ता है। सभी का सद्गति दाता, पतितों को पावन बनाने वाला मैं हूँ। तुम जानते हो, यह दुनिया पावन बन रही है। पतित उनको कहा जाता है जो विकारों में जाते हैं। सन्यासी भी इसलिए घर–बार छोड़ जाते हैं। कहते हैं, नारी नर्क का द्वार है। अगर नर न हो तो नारी नर्क का द्वार कैसे बन सकते हैं? कन्या को तो नर्क का द्वार कह न सकते, मेल मिलने से ही नर्क का द्वार बनते हैं। अब तो ये माताएँ स्वर्ग का द्वार हैं, स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। बाप माताओं को आकर उठाते हैं। सन्यासियों को समझाना है, तुम मेल जब सगाई करते हो तब तो नर्क का द्वार खुलता है। ड्रामा में ये निवृत्तिमार्ग का भी पार्ट है, नहीं तो भारत बहुत पतित हो जाता। देवताएँ वाममार्ग में जाते हैं तो फिर उन्हों को देवता नहीं कहा जाता, फिर वो हिन्दू हो जाते। (सांवरकर का मिसाल) बोला, अपन तो इस समय दैत्य हैं। तुम अब कहते हो, हम ब्राह्मण हैं, देवता बन रहे हैं। तुम कोई को भी समझाए सकते हो। ऐसे नहीं कि डॉक्टरी वा सर्जरी आदि की नॉलेज छोनी(ड़ी) जाती है। नहीं। शरीर निर्वाह अर्थ तो सब कुछ करना है, बैठ नहीं जाना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते ये पढ़ना है। पहले तो इन बच्चों को भट्ठी में रहना था, गऊशाला बननी थी। इन बातों को मनुष्य नहीं समझते। गीता सुनाने वालों पास हज़ारों मनुष्य जाते हैं, सत–2 कह चले (जाते), समझते कुछ भी नहीं। बाबा ने समझाया है, ये वेद–शास्त्र आदि सब गीता की रचना हैं; परन्तु सिर्फ गीता पढ़ने से भी कोई फायदा नहीं। फायदा तब हो जब बाप आकर फिर से मनुष्य से देवता, पतित से पावन बनावे। इस मृत्युलोक का ये अंतिम जन्म है। मौत सामने खड़ा है। मृत्युलोक बदल अमरलोक होगा। सतयुग को अमरलोक कहा जाता है, आदि–मध्य–अंत दुख नहीं होता। तुम काल पर जीत पहनते हो। वहाँ अकाले मृत्यु होता नहीं जो रोना पड़े। रोने का नाम ही नहीं रहता। बाप कहते हैं, तुम ही स्वदर्शनचक्रधारी थे, फिर 84 जन्म लेते सतो, रजो, तमो

(में) पास करना है। अब जो जितना पुरुषार्थ करे। तुम जानते हो, सूर्यवंशी, चंद्रवंशी डिनायस्टी स्थापन हो (रही) है। तुम्हारी नॉलेज है नई, नई दुनिया के लिए। नया भारत, नया राज्य, नया युग होता है। एवरीथिंग न्यू तो बाप ही बनावेगा। पुराने मकान में सब कुछ, फर्नीचर आदि पुराना ही होता है। नए घर में ज़रूर सब कुछ नया रखेंगे, पुराना शोभा न पावे। तुमको भी वहाँ नई दुनिया में सब कुछ नया होगा। यहाँ तो देखो, मनुष्य मरते कैसे हैं! ये है दुखधाम, अशांतिधाम, तब तो गाती है– यदा–2...; परन्तु मनुष्य समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं, इन साधुओं आदि का भी उद्धार करने मुझे आना पड़ता है, तो ज़रूर पतित ठहरे। पतित दुनिया में पतित ही होंगे। सन्यासी आत्मा को पवित्र बनाते हैं; परन्तु शरीर तो पवित्र मिल न सके, जन्म ब जन्म सन्यास करना पड़े। तुम थोड़े जन्म ब जन्म सन्यास करेंगे। इसको सर्वोत्तम सन्यास कहा जाता है। वो तो मुफ्त में खाते हैं, देते कुछ भी नहीं। पुनर्जन्म तो मिलता ही है। लड़ाई वालों का भी अंत मते सो गते होता है ना। वे भी कहते हैं, गीता में लिखा हुआ है– युद्ध के मैदान में जो मरेगा वो स्वर्ग में जावेगा। अब स्वर्ग में तब जावे जब संगमयुग हो। बाकी लड़ाई वाले तो वो संस्कार ले जाते हैं, फिर लड़ाई में ही चले जाते हैं। जन्म ब जन्म लड़ाई में जावेंगे, नहीं तो ऐसी वृद्धि कैसे होती? बाबा मिलिट्री वालों को भी समझाते हैं कि तुमको लड़ना तो है ही देश के बचाओ(बचाव) लिए, मारना भी है; परन्तु शिवबाबा को याद करते तुम सर्विस करो तो शिवबाबा पास चले (जावेंगे)। वो फिर तुमको स्वर्ग में भेज देंगे। इस ज्ञान का विनाश नहीं होता, स्वर्ग में तो ज़रूर आवेंगे। साधारण प्रजा भी बननी है। सारी किंगडम स्थापन हो रही है, अब जो जितना पुरुषार्थ करे। बहुत वर्सा पाने आते हैं; परन्तु फिर हार खाए लेते हैं। हार न खाना चाहिए। बाप कहते हैं बॉक्सिंग है माया से, खबरदार रहना! बेहोश न होना। तूफान बड़े–2 झाड़ों को भी गिराए देते हैं। फूल–कलियाँ भी गिर जाती हैं। तुमको माया रूपी विकार (सताए) न सकता। ..... काम कर्मणा में न आना चाहिए, उसका विकर्म बन जावेगा। तूफान तो बहुत आवेंगे। लड़ाई है ना! सर्वशक्तिवान उस्ताद मिला है। जीत पाने वालों पर तालियाँ बजाते हैं। कहते हैं– देवताएँ फूल बरसाते हैं, जयजयकार हो जाती है। तुमको पहले–2 रुद्रमाला बनना है, जितना जो याद करेगा। अपन को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। यह है रूहानी यात्रा। हमको बाबा के गले का हार बनना है। पुरुषार्थ चाहिए ऊँच ते ऊँच पद पाने का। सपूत बच्चे बहुत मेहनती होते हैं। स्कूल में जो अच्छा नं० लेते हैं उनका अख़बार में भी नाम पड़ता है। यहाँ भी अच्छे पुरुषार्थियों को माँ–बाप देख बहुत खुश होते हैं। बाप की याद दिलानी है, एक/दो को सावधान करना है। आगे चलकर बहुत समझते जावेंगे। ऐसे बहुत कहते हैं, हम आगे भी आते थे; परंतु इतना समझ में न आता था, अभी समझ में आ गया है। हाँ, अभी ज्ञान की बहुत अच्छी–2 प्वाइंट्स निकलती रहती हैं। वृद्धि होती जावेगी। झाड़ की वृद्धि होती है ना! देरी से आने से थोड़े ही किस खावेंगे! कैसे पिछाड़ी में आने वाले पुरानों से भी आगे जा रहे हैं; क्योंकि प्वाइंट्स की ताकत मिलती है। दिन–प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइंट्स गुह्य होती जाती हैं। यहाँ अपन अशरीरी हो बैठते हैं; जैसे रात को आत्मा थक कर अशरीरी हो जाती है, ऑटोमैटिकली नींद आ जाती है। यहाँ समझाना होता है, हम आत्मा हैं। बाप को याद करना है। यह है यात्रा। बाप कहते हैं, याद से ही विकर्म विनाश होंगे। स्वदर्शनचक्र फिराते रहो, आप समान बनाते रहो। प्रजा और वारिस भी बनाओ गृहस्थ धर्म में रहते। गवर्मेन्ट भी 8 घंटा सर्विस (ले)ती है। यह भी कहते हैं, 8 घंटा अंत में सर्विसएबुल बनना पड़ेगा। आप समान बनाते–2 तुमको खुशी बहुत अच्छी रहेगी। तुम बहुत धनवान बनते हो। अनगिनत धन होगा। गुडमॉर्निंग।